भारत की शांत जनसांख्यिकीय क्रांति: प्रजनन दर (Fertility Rates) में गिरावट को समझना

(UPSC प्रासंगिकता- GS पेपर 1 – जनसंख्या और जनसांख्यिकी)

चर्चा में क्यों?

'राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण' (NFHS) के आंकड़ों पर आधारित हालिया विश्लेषण भारत में एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय बदलाव को उजागर करता है। भारत, जिसे ऐतिहासिक रूप से उच्च-प्रजनन क्षमता वाले विकासशील राष्ट्र के रूप में देखा जाता था, अब 'प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन क्षमता' (Replacement Level Fertility) के करीब पहुंच गया है।

भारत की **कुल प्रजनन दर** (TFR) 1990 के दशक में प्रति महिला लगभग चार बच्चों से घटकर आज लगभग **2.0** रह गई है, जो कम-प्रजनन वाले समाज की ओर तेजी से संक्रमण का संकेत देती है। इस बदलाव का आर्थिक विकास, प्रवासन पैटर्न, उम्र बढ़ने (aging) और सार्वजनिक नीति पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।

पृष्ठभूमि

दशकों तक, भारत के विकास की चर्चाओं में तीव्र जनसंख्या वृद्धि की चिताएँ हावी रहीं। पॉल एर्लिच की 'द पॉपुलेशन बॉम्ब' जैसी प्रभावशाली कृतियों ने भविष्यवाणी की थी कि जनसंख्या विस्फोट के कारण भारत जैसे देशों को गंभीर संसाधन संकट का सामना करना पड़ेगा।

परिणामस्वरूप, 20वीं शताब्दी के अंत में जनसंख्या नियंत्रण सार्वजनिक नीति का केंद्र बन गया। हालाँकि, पिछले दो दशकों में भारत में प्रजनन दर में नाटकीय गिरावट देखी गई है, जिसे NFHS के क्रमिक दौरों के माध्यम से प्रलेखित किया गया है। नवीनतम सर्वेक्षण दर्शाता है कि अधिकांश भारतीय राज्यों में अब प्रजनन स्तर **2.1** के प्रतिस्थापन दर (Replacement Rate) पर या उससे नीचे है।

भारत के प्रजनन संक्रमण (Fertility Transition) के रुझान

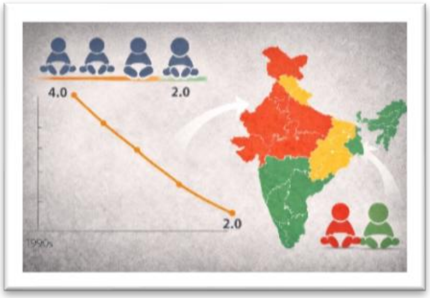

1. प्रजनन दर में तीव्र गिरावट कई विकासशील देशों की तुलना में भारत में यह बदलाव असाधारण रूप से तीव्र रहा है।

मुख्य रुझान:

- 1990 के दशक में लगभग 4 से घटकर आज 2 के करीब।
- अधिकांश भारतीय राज्य अब प्रतिस्थापन स्तर या उससे नीचे हैं।
- देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रजनन स्तर में समानता (Convergence)। पहले, केरल और तमिलनाडु जैसे दक्षिणी राज्यों में उत्तर प्रदेश और राजस्थान जैसे उत्तरी राज्यों की तुलना में प्रजनन दर काफी कम थी, लेकिन हाल के आंकड़े बताते हैं कि यह क्षेत्रीय अंतर अब कम हो रहा है।

प्रजनन दर में गिरावट के लिए जिम्मेदार कारक

1. महिलाओं की शिक्षा में वृद्धि महिलाओं के बीच शिक्षा तक पहुंच ने प्रजनन दर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उच्च शिक्षा से **विवाह में देरी**, श्रम बल में अधिक भागीदारी और छोटे परिवारों के प्रति प्राथमिकता बढ़ती है।

2. शहरीकरण और सामाजिक परिवर्तन शहरीकरण, प्रवासन और मीडिया के प्रभाव ने समाज में छोटे परिवार के मानदंडों के प्रसार को तेज किया है। एक बार जब 'दो-बच्चों का मानदंड' सामाजिक रूप से स्वीकृत हो जाता है, तो प्रजनन दर तेजी से गिरती है।

3. सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं ने बाल उत्तरजीविता दर (Child Survival Rates) में सुधार किया है। टीकाकरण और मातृ स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रमों ने शिशु मृत्यु दर को कम किया है, जिससे परिवारों को सुरक्षा के रूप में अधिक बच्चे पैदा करने की आवश्यकता कम महसूस होती है।

4. बच्चों के पालन-पोषण की बढ़ती लागत आधुनिक आर्थिक परिस्थितियों ने बच्चों के पालन-पोषण को महंगा बना दिया है। शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास पर बढ़ते खर्च के कारण परिवारों में कम बच्चे पैदा करने का रुझान बढ़ा है।

भारत के जनसांख्यिकीय संक्रमण के निहितार्थ

1. जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend) का अवसर

प्रजनन दर गिरने से आश्रितों (dependents) की तुलना में कार्यशील आयु वाली जनसंख्या का हिस्सा बढ़ जाता है। यह तेजी से आर्थिक विकास की संभावना पैदा करता है। हालांकि, इसे नौकरी सृजन और कौशल विकास के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।

2. क्षेत्रीय जनसांख्यिकीय असंतुलन

दक्षिणी और पश्चिमी राज्यों में प्रजनन दर में गिरावट पहले हुई है और वे तेजी से 'बूढ़ी होती आबादी' (ageing population) की ओर बढ़ रहे हैं। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में आबादी अभी भी अपेक्षाकृत युवा है। यह प्रवासन पैटर्न और राजनीतिक प्रतिनिधित्व को नया आकार दे सकता है।

3. वृद्ध होती जनसंख्या

बढ़ती जीवन प्रत्याशा और गिरती प्रजनन दर के साथ, भारत धीरे-धीरे वृद्ध होती आबादी की चुनौती का सामना करेगा। इसके लिए मजबूत पेंशन प्रणाली और विस्तारित स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होगी।

भारत के लिए नीतिगत चुनौतियाँ

भारत का ध्यान अब 'जनसंख्या नियंत्रण' से हटकर **'जनसंख्या प्रबंधन'** पर होना चाहिए। मुख्य चुनौतियों में शामिल हैं:

- बढ़ती कार्यबल के लिए पर्याप्त रोजगार पैदा करना।
- बड़े पैमाने पर आंतरिक प्रवासन का प्रबंधन।
- बुजुर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा ढांचे को मजबूत करना।

आगे की राह

- रोजगार सृजन के लिए श्रम-प्रधान औद्योगीकरण को बढ़ावा दें।
- उत्पादकता बढ़ाने के लिए शिक्षा और कौशल विकास प्रणालियों को मजबूत करें।
- वृद्ध होती आबादी के लिए पेंशन प्रणाली विकसित करें।
- प्रवासन और बदलते पारिवारिक ढांचे के अनुरूप शहरी बुनियादी ढांचे में सुधार करें।

निष्कर्ष

भारत का जनसांख्यिकीय पथ एक गहरे परिवर्तन से गुजरा है। देश जनसंख्या विस्फोट की चिंताओं से निकलकर कम-प्रजनन वाले समाज की चुनौतियों की ओर बढ़ गया है। दीर्घकालिक विकास के लिए जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग करना और साथ ही उम्र बढ़ने वाली आबादी के लिए तैयारी करना महत्वपूर्ण होगा।

UPSC मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत अधिकांश राज्यों में प्रजनन दर में गिरावट के साथ एक शांत जनसांख्यिकीय संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। इस गिरावट के कारणों की चर्चा कीजिए और भारत के लिए इसके सामाजिक-आर्थिक निहितार्थों का विश्लेषण कीजिए। (250 शब्द)

OPTIONAL
SUBJECT
वैकल्पिक विषय
PSIR
Fee - मात्र 6999₹
केवल 01 से
06 जुलाई
Dr. Faiyaz Sir

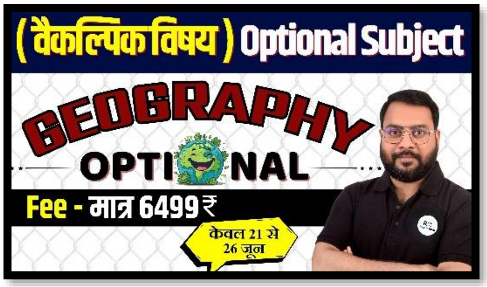

(वैकल्पिक विषय) Optional Subject
GEOGRAPHY
OPTIONAL
Fee - मात्र 6499₹
केवल 21 से
26 जून